कुण्डलिनी : जीवन का रहस्य

बाबा मुक्तानन्द द्वारा लिखित पुस्तक से एक उद्धरण

सच तो यह है कि यही शरीर भगवान का मन्दिर है। इस मानव-शरीर से अधिक महान कोई मन्दिर नहीं है। हर एक को इस पर चिन्तन करना चाहिए और यह समझना चाहिए कि भगवान उसके अन्तर में रहते हैं। जिस तरह कोई कहता है, "यह मेरी सम्पत्ति है" या "यह मेरा घर है," वैसे ही यह कहने का अधिकार अर्जित करना चाहिए, "भगवान मेरे अन्तर में हैं।" तुकाराम महाराज ने कहा है, "मैं भगवान को ढूँढ़ने निकला, परन्तु भगवान नहीं मिले। मैं स्वयं ही भगवान बन गया। इसी शरीर में भगवान ने अपने आपको मेरे समक्ष प्रकट किया।" और यह पूर्णतः सच है।

कुण्डलिनी के सहस्रार में लय होने पर इसी ज्ञान का उदय होता है। यह पराभक्ति की अवस्था है, जिसमें न कोई भक्त है, न भगवान और न ही जगत है; केवल एकत्व है। जिस प्रकार एक नदी दीर्घ काल तक बहने के बाद समुद्र में मिल जाती है और समुद्र ही बन जाती है, उसी प्रकार कुण्डलिनी अपना कार्य समाप्त करने के बाद जब सहस्रार में स्थिर हो जाती है, तब तुम पूर्ण रूप से भगवान में लीन हो जाते हो।

तुम्हारी सभी अशुद्धियाँ और आवरण नष्ट हो जाते हैं और तुम आत्मा में पूर्ण विश्रान्ति पाते हो। जिस आवरण के कारण तुम द्वैतभाव से देखते थे, वह हट जाता है और तुम जगत का अनुभव, कुण्डलिनी के आनन्दमय विलास के रूप में, ईश्वरीय शक्ति की क्रीड़ा के रूप में करने लगते हो। तुम विश्व को परम आनन्दमय प्रकाश के रूप में देखते हो, जो तुमसे अभिन्न है और इसी बोध में तुम दृढ़ता से अवस्थित हो जाते हो। यह मुक्ति की अवस्था है, पूर्णता की अवस्था।

जिसने यह स्थिति प्राप्त कर ली है उसे समाधि की अवस्था का अनुभव करने के लिए आँखें बन्द करने की और दूर एकान्तवास में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। चाहे वह ध्यान कर रहा हो, खा रहा हो, स्नान कर रहा हो, सो रहा हो, चाहे वह अकेला हो अथवा दूसरों के साथ हो, वह आत्मशान्ति का और आत्मानन्द का अनुभव करता है। वह जो कुछ भी देखता है, वह भगवान है; वह जो कुछ भी सुनता है, वह भगवान है; वह जो कुछ भी चखता है, वह भगवान है और वह जो भी शब्द बोलता है, वे शब्द भगवान के हैं। जगत के बीच रहकर भी वह गुहा के एकान्त का अनुभव करता है और लोगों के बीच

वह समाधि-सुख का अनुभव करता है। इसी स्थिति का वर्णन 'शिवसूत्र' में 'लोकानन्दः समाधिसुखम्', ऐसा कहकर किया गया है, 'जगत का आनन्द समाधि का सुख है।'

इसी स्थिति को प्राप्त करने के लिए हमें ध्यान करना चाहिए, अपनी कुण्डलिनी को जाग्रत करवाना चाहिए। हम भगवान को पाने के लिए ध्यान नहीं करते हैं क्योंकि वे तो हमें पहले से ही प्राप्त हैं। हम ध्यान करते हैं ताकि हमें यह बोध हो जाए कि भगवान हमारे अन्दर प्रकट हैं। यही सिद्धयोग का ज्ञान है, यह फल है उस अन्तर-योग का जो सिद्धगुरु की कृपा से कुण्डलिनी जाग्रत होने पर क्रियाशील होता है।

और इसीलिए मैं सतत सबसे कहता हूँ, "आपको ध्याओ, आपका सम्मान करो, आपको पूजो। आपका राम, आपमें आप होकर रहता है।"

डिज़ाइन संकल्पना : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, कुण्डलिनी : जीवन का रहस्य
[चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१२], पृ ४४-४५।
डिज़ाइन प्रारूप-रचना : शबनम लाब्रा और हीरा टैनर।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।